चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

कृषि विज्ञान केन्द्र, ऊझा, पानीपत

वर्मीकम्पोस्ट एक उत्तम जैविक खाद

1. किसान प्रायः गोबर की खाद का प्रयोग करते हैं परन्तु इसको वैज्ञानिक विधि से तैयार नहीं करते हैं। सड़कों के किनारे गोबर के लगे ढ़ेर गंदगी फैलाने का कारण है। इसी गोबर को सफलतापूर्वक अति उत्तम गंध रहित दानेदार खाद में बदला जा सकता है। वर्मीकम्पोस्ट में पोषक तत्वों की मात्रा गोबर की खाद से 2-3 गुणा अधिक होती है। इसमें नत्रजन, फासफोरस तथा पोटाश की मात्रा क्रमशः 1-2%, 1.0-1.5% तथा 2-3% होती है तथा सूक्ष्म तत्व मौजूद होते हैं।
2. जैविक खाद होने के कारण वर्मीकम्पोस्ट में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की क्रियाशीलता अधिक होती है जो भूमि में रहने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं के लिए लाभदायक एवं उत्प्रेरक का कार्य करते हैं।
3. वर्मीकम्पोस्ट में उपस्थित पौध पोषक तत्व पौधों को आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।
4. मृदा में जीवांश पदार्थ (हयूमस) की वृद्धि होती है, जिससे मृदा संरचना, वायु संचार तथा जलधारण क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ भूमि उर्वराशक्ति में वृद्धि होती है।
5. किसान प्रायः फार्म अवशेषों को जलाते हैं जिससे प्रदूषण फैलता है। इन्हीं फसल अवशेषों को उत्तम खाद में बदला जा सकता है।
6. इसे तैयार करने में गोबर के खाद की अपेक्षा कम समय लगता है। गोबर की खाद के लिए 6-7 महीनें चाहिएं जबकि यह 60-70 दिन में तैयार हो जाता है।
7. वर्मीकम्पोस्ट में केचुओं द्वारा छोड़े गए विटामिन व हारमोन मौजूद होते हैं, ये पौधों को स्वस्थ बनाते हैं तथा उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार होता है।
8. कृषि व डेयरी आधारित मिश्रित खेती में वर्मीकम्पोस्ट को एक सफल व्यवसाय के रूप में अपनाया जा सकता है। इसकी खेतों और शहरों में लघुवाटिका के लिए काफी मांग रहती है।
9. वर्मीकम्पोस्ट आने वाले समय में टिकाऊ खेती का आधार बन सकता है।

कृषि संबंधित अधिक जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, ऊझा, पानीपत में सम्पर्क करें।

वर्ष 2019 प्रतियां 1500